कोंकणी साहित्य

प्रो. रवींद्रनाथ मिश्र

गोवा मुक्ति के छठें दशक में प्रवेश कर चुका है। विगत दो वर्ष पूर्व गोवा में स्वर्ण जयंती समारोह का आयोजन बड़े धूमधाम से हुआ जिसके अंतर्गत यहाँ के परिवेशगत जीवन के विकास का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया गया। इसके साथ ही सुसंस्कृत, सुशिक्षित, सुस्वच्छ, सुसंपन्न, सुविज्ञ, सुविख्यात, सौहार्दपूर्ण गोवा बनाने की कामना की गई। आज गोवा विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति की दिशा में बढ़ रहा है। पिछले 35 सालों से मैं भी गोवा की उन्नति का साक्षी रहा हूँ। भारतीय और पाश्चात्य संस्कृति के मिले-जुले प्रभाव और पर्यटन स्थल होने के कारण यहाँ की संस्कृति को लेकर भारतीय जनमानस में एक अलग तरह की धारणा है, जोकि सच्चाई से बहुत दूर है। आज मीडिया और वैश्वीकरण के युग में अपनी परंपरा और संस्कृति को संजोकर रखना केवल गोवा के लिए ही नहीं अपितु संपूर्ण देश के लिए चुनौती पूर्ण हो गया है। आज साहित्य के समक्ष एक चुनौती हो गई है कि वह किस प्रकार परंपरागत सामाजिक संस्कृति को बचाए रखकर मानवीय मूल्यों की रक्षा करे। यदि वह ऐसा नहीं करता है तो उसमें कहीं-न-कहीं खोट है। गोवा का कोंकणी साहित्य भी अपने धर्म का पालन बखूबी कर रहा है। साहित्य के क्षेत्र में गोवा अविरत विकास की दिशा में उन्मुख है। आज अन्य भारतीय भाषाओं की भाँति कोंकणी साहित्य की विभिन्न विधाओं में लेखन का कार्य हो रहा है।

कोंकणी काव्य

भारतीय साहित्य की अन्य भाषाओं की भांति कोंकणी की लोक काव्य परंपरा बहुत पुरानी है। गोवा पर लगभग साढ़े चार सौ वर्षों तक पोर्तुगीज शासन होने के कारण यहाँ के साहित्य और संस्कृति पर उनका प्रभाव दिखाई देता है, फिर भी यहाँ के लोगों ने अपनी संस्कृति की विरासत को बचाए रखा है। गोवा का वास्तविक विकास 1961 के बाद हुआ। साहित्य के क्षेत्र में भी यहाँ उस समय तीन पीढ़ियाँ लेखन के क्षेत्र में सक्रिय थीं। गोवा मुक्ति आंदोलन के दौरान मुख्यतः राष्ट्रीय एवं सामाजिक चेतना को लेकर कविताएँ लिखी गईं। कालांतर में समसामयिक परिवर्तित परिवेशगत जीवन पर कविताएँ लिखी गईं और आज भी लिखी जा रही हैं। काव्य-लेखन की दिशा में परेश नरेंद्र कामत काफी सक्रिय हैं। अभी तक इनके *अळंग* (2000), *गर्भखोल* (2004), *शुभंकर* (2009) और 2013 में *चित्रलिपि* नामक काव्य-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। आपको कोंकणी भाषा मंडल, कला साहित्य, जनगंगा साहित्य, जे. सी. आय फोंडेंचो युथ आयकॉन और युवा सृजन (साहित्य) आदि पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। प्रस्तुत काव्य-संग्रह की कविताएँ समाज के विभिन्न संदर्भों और बाल मनोविज्ञान पर आधारित हैं।

परेश नरेंद्र कामत के *चित्रलिपी* काव्य-संग्रह में *चट्टान*, *जलतरंग*, *पानी की प्रतिमा*, *नदी के समान*, *खरगोश*, *किरणें*, *पकी हुई धूप*, *तुम जहाँ खड़ी हो*, *चंद्रमुखी*, *चंद्रमा का सपना*, *माँ*, *अंतरात्मा*, *चींटी*, *गाय* आदि शीर्षक की कुल सत्तर कविताएँ संकलित हैं। व्हडे (नांव) नामक कविता में कवि की प्रेमानुभूति का चित्रण किया गया है- "*रातीच्या ह्या / तुडुंब भरिल्ल्या काळख्या उदकांत / उद्देल्ली ही / चंद्रकोर / म्हाका / व्हडें कसी दिसता...*"

रात के अंधेरे में पूर्ण रूप से भरे हुए शीतल जल में चंद्रकोर की छाया कवि को नाव की भाँति लग रही है क्योंकि वह अपनी प्रेयसी को नाव में बिठाकर एक-दूसरे की आँखों में आँखें डालकर चिरंतन सपने देखना चाहता है। *अशें कांय ना* (ऐसा कुछ नहीं) में भी प्रेम के भावों को व्यक्त किया

गया है। कवि का कथन है कि तुम मुझे देख रही हो। मुझमें ऐसा कुछ भी नहीं है लेकिन मुझे लगता है कि मानो तुम मुझे अपनी हजारों आँखों से देख रही हो। *कावळे* (कौआ) कविता में अंधकार के विराट रूप का वर्णन किया गया है- "*कावळे उडत चल्ल्यात / मळबांत काळे काळे तिळसनां / आनी येता काळोख / तांच्या फाटल्यान / महाकाय पाखां हालयत विराट जावन।*"

सायंकाल काले कौवे उड़कर आकाश की ओर जा रहे हैं और उनका पीछा अंधकार अपना विराट रूप धारण कर आगे बढ़ रहा है। देखते ही देखते सारे कौवे आसमान की ओर उड़कर आँखों से ओझल हो गए और अंधकार की कालिमा रूपी पंखों ने सारे आकाश को घेर लिया। परेश नरेंद्र कामत की कविताएँ अपने परिवेशगत जीवन की अभिव्यक्ति हैं जिनमें प्रकृति, प्रेम, गृहस्थ जीवन और नारी सौंदर्य के विविध चित्र हैं।

सेवानिवृत्त पुष्पलता कामत का *जायो-जुयो* नामक बाल कविता का संकलन प्रकाशित हुआ जिसमें उन्होंने मेंढक, मोर, मैना, आम, चाँद, हाथी, बंदर, कौवा आदि के चित्रों के माध्यम से ज्ञान, शिक्षा, एकता, प्रेम आदि का संदेश दिया है- "*मेरेर बसून बेबो / म्हण्टा डरांव-डरांव / थंयसरुच राव मात्सो- सांगतां कितें हांव / हिंदू, मुस्लीम क्रिस्तांव / धर्म खंयचोय जांव / गोंयकार आमी सगळे / एकचारान रांव / शाळेंत घाला भुरग्या नांव / बरप अक्षर शिकत सगळे / नातर दोळे आसून आंदळे।*"

इस कविता में मेंढक अपनी टर्र-टर्र की कर्कश आवाज निकाल कर यह कहना चाहता है कि गोवा के हिंदू, मुस्लिम और ईसाई संप्रदाय के लोगों को आपस में भेदभाव भुलाकर, मिल-जुलकर एकता की भावना से रहना चाहिए। इसके अतिरिक्त वह कहता है कि सभी बच्चों को पाठशाला भेजना चाहिए ताकि वे पढ़-लिखकर अपना भविष्य सुधार सकें। कवयित्री की दो और पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। उषा ज. कामत की कविताएँ यहाँ की पत्र-पत्रिकाओं में छपती रहती हैं। यहाँ के मराठी दैनिक समाचार-पत्र *गोमंतक* और *गोवा-दूत* में भी आपकी मराठी कविताएँ और ललित निबंध प्रकाशित होते रहते हैं। 2013 में उषा का *उर्बा* नामक, काव्य-संग्रह प्रकाशित

हुआ, जिसमें *घनश्याम, कर्म, मेरी इच्छा, जीवन की सार्थकता, बेटी, मन, वंश का दीपक, माँ की याद, यादों की गठरी, पुत्र के लिए* आदि शीर्षक की कुल 61 कविताएँ संग्रहीत हैं। *इत्सा म्हजी* (मेरी इच्छा) कविता कवयित्री के उदात्त भावों पर आधारित है- "*म्हाका जावंक जाय / एक न्हंय / खळखळून व्हांवत रावपी / तानेल्ल्याची तान भागोवपी / सगळें पोटांत घेवन धांवत-धांवत / दर्याक वचून मेळपी।*"

प्रस्तुत कविता में कवयित्री पेड़, नदी और दीपक बनकर मानवता की सेवा करने की इच्छा व्यक्त करती है। वह पेड़ बनकर यात्रियों की भूख मिटाकर उन्हें शीतल छाया प्रदान करना चाहती है। नदी बनकर उनकी प्यास और दीपक होकर उन्हें अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने की कामना करती है। यह कविता परहित भाव से परिपूर्ण है। दूसरी कविता *याद आईची* (माँ की याद) माँ की संवेदनाओं से भरी है, जिसमें उषा कामत को आलमारी से कुछ ढूँढ़ते हुए गोजडी (कथरी) मिल जाती है। इसके माध्यम से माँ से संबंधित सारी यादें तरोताजा हो जाती हैं- "*गोजडी एक मेळ्ळी / आलमार उस्तायतनां / सगळयो यादी दोळयांर आयल्यो / बशिल्यो तळा-पोंना / गेपणांतली आवडीची / लुसलुशीत पूण ज्याम जाळ्ळी / हातान शिवीळ्ळी / तशाची तशीच उरील्ला सांसपीतां सांसपीता / काळजा खोलाय दोळयांत देंवली / घट्ट धरुन वेंगायली तिका / आई दोळयामुखार आयली।*"

उषा कामत की कविताएँ मानवीय संवेदनाओं और प्रकृति के उदार भाव से जुड़ी हैं जिनमें उदारता और मानवता का संदेश भरा पड़ा है।

गंधकुपी नामक 50 कविताओं का संग्रह बाप्तीसता डिसोजा ने इस वर्ष प्रकाशित किया जिसमें *अद्‌भुत प्रेम, अतृप्त मन, वैभव, कहानी युगों-युगों की, परंपरा, मर्यादा, स्वयंवर, रिश्ते, सच्चा प्रेम, आग, पहली वधू, हृदय का वृंदावन, सितारों के पार, हो तुम कौन?, संयम* आदि कविताएँ संकलित हैं। *अद्‌भुत मोग* (अद्‌भुत प्रेम) कविता में कवि प्रकृति के माध्यम से अपने प्रेम के निजी भावों को व्यक्त करता है। इसमें छायावाद की प्रवृत्तियाँ दिखाई देती हैं- "*युगा-युगा चलयत आयल्यांत रीत कर्तव्याची / मिठयेंत तुज्या अशें*

कितें आसा / हांवूच म्हाका विसरून वता दुसऱ्या दिसा स्पर्शाक तुज्या आशेतां।"

प्रस्तुत कविता में मूलतः शिशिर ऋतु के आगमन से किस प्रकार संपूर्ण वातावरण सुगंधित हो जाता है, जिससे कवि मन-प्रेम के भावों से सराबोर हो जाता है। उक्त पंक्तियों में कवि का कथन है कि यह जीवन और संसार युगों-युगों से चला आ रहा है अपनी परंपरा के अनुसार लेकिन तुम्हारे आलिंगन में ऐसा क्या जादू है जिसे महसूस कर मैं अपने-आप को भूल जाता हूँ। दूसरे दिन पुनः होश आने पर तुम्हारे उस स्पर्श का स्मरण कर जीवन जीने के लिए लालायित हो उठता हूँ। एक दूसरी कविता *सपन* (स्वप्न) हास्य-प्रधान कविता है, जिसमें कवि स्वप्न देखता है कि कवि-सम्मलेन में कविता पाठ करने के बाद सभी लोगों ने उसकी सुंदर कविता पर ताली बजाई और उसकी प्रतिभा की सराहना की। स्वर्गीय कवि बाकी बाब बोरकर ने उनकी पीठ थपथपाई और भरत नायक ने हाथ मिलाया। जब कवि ने स्वप्न में चादर ओढ़ी तो पत्नी ने कमर में लात मारी और कहा कि इतना पीकर आए हो। संसार की चिंता तो तुमको है नहीं और न अपने आप की। उठो! नहीं तो दूँगी दूसरा लात। यह सुनकर कवि को लगा कि हो गया सपने का सत्यानाश- *"भरपूर पियेवन न्हिदयला / ना कसलीच दाद, ना घेना जिवाची कुयताद / पंडुक ना ताका संवसाराचें कांयच / उठ! ना जाल्यार घालतली दुसरी लात / सपनाचो केलो सत्यनाश।"*

डिसोजा की कविताओं में नैसर्गिक और मानवीय मांसल प्रेम की गंध है। इनकी कविताओं पर हिंदी स्वच्छंदतावाद का प्रभाव है। इसके साथ ही कई कविताएँ मनोविनोद की भी हैं।

पूर्वा उदय गुडे युवा कवयित्री हैं। इन्हें कविता, निबंध, कथा आदि के लेखन पर यहाँ के महाविद्यालयों और स्थानीय कोंकणी संस्थाओं द्वारा कई पुरस्कारों से नवाजा गया है। *सपन साद* इनका पहला काव्य-संग्रह है, जिसमें *झरना, अनुभव, पारिजात, कला, चीख थकावट, परीक्षा, गाँव वेदना, वक्त, घर, स्पर्श, पुकार, दुख, प्रेम, मन ऐसा... बावला* आदि शीर्षक की कुल 64

कविताएँ संग्रहीत हैं। *अणभव* (अनुभव) कविता में पूर्व जीवन में आने वाले सुखानुभव या दुखानुभव आगे के जीवन में हमें सहारा देते हैं। सुख के क्षण तो निकल जाते हैं लेकिन दुख के हमारे जीवनानुभव दुख से मुक्ति के लिए साहस और प्रेरणा देते हैं- "*जागयलो मनांत / आत्मविश्वास / मरणावेळार दिलो / धिराचो हात / खिणा खिणाक / मेळ्ळो / तांचोच सागात।*"

आस (आशा) कविता में जीवन की उम्मीद का जिक्र किया गया है। मनुष्य जीवन में कुछ-न-कुछ प्राप्त करने के लिए उसके पीछे भागता है। यहाँ पूर्वा कहती है कि हमें निराश और हताश होकर पीछे नहीं मुड़ना चाहिए बल्कि आशा और विश्वास के साथ आगे बढ़ना चाहिए। इसके लिए वह बचपन में तितलियों के पीछे भागने और उनको पकड़ने का उदाहरण देती हुई कहती है कि प्रत्येक दिन प्रयत्न करने पर एक-न-एक दिन वह हाथ लग ही जाती है- "*ल्हान आसतना / फुलपांखरा फाटल्यान / धांवत आसतालें / केन्ना तरी / हातांत येतलेंच / हे आशेन / तेन्ना धांवपाक / मजा येताली / तर्शेचहाव / आताया धावट आसा / फरक इतलोच / आतां त्या / फुलपाखराच्या / जाग्यार / सपनां उडटात / केन्ना तरी / हातांत येवपाची / आस जागयत...*"

पूर्वा की कविताएँ जीवन में आशा और प्रेरणा का संचार करती हैं, रोजमर्रा की ज़िंदगी का बयान करती हैं और विविध भावबोधों पर आधारित हैं। दूसरी युवा कवयित्री अदिती अमृत फडते का *पिसुडलेल्यो यादी* शीर्षक का पहला काव्य-संग्रह इस वर्ष प्रकाशित हुआ। इन्हें भी कविता, नाटक में अभिनय और भाषण प्रतियोगिता के लिए कई स्थानीय पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। इनके इस काव्य-संकलन में *प्रार्थना, माँ, पुकार, सुंदर गोवा, ऐसा मुझे लगता है, सवाल, जीवन, तूफान, सहारा, निशाना, आशा, पदवी, गुदगुदी* आदि कुल 58 कविताएँ संकलित हैं। *मागणें* (प्रार्थना) कविता में अदिती श्रीराम, महादेव और महालक्ष्मी से प्रार्थना करती हैं कि क्रमशः आप जैसा आज्ञाकारी पुत्र हर घर में हो, आप जैसा विशाल हृदय प्रत्येक मनुष्य का हो और आपकी कृपा से हर घर धन-दौलत से भरा हो- "*हे श्रीरामा मागणें तुजेकडेन / तुज्या सारको आज्ञाकारी पूत / दर घरांत आसचो / हे महादेवा मागणें तुजेकडेन / तुज्या*

सारकें विशाल मन / सगळयांचे आसचें / हे महालक्ष्मी देवी मागणें / तुजेकडेन तुजे कृपेन / सगळयांचे घर भरून / सदांच आसचें...."

दूसरी कविता *नाता* (संबंध) में विश्वास को संबंध की जड़ कहा गया है। इन्हीं संबंधों के सहारे हम जीवन जीते हैं। इन नातों को हम केवल प्रेम के द्वारा पुष्ट कर सकते हैं लेकिन इनके बीच अहंकार आ जाने से ये क्षणभर में टूट भी जाते हैं। वस्तुतः आज संबंधों में विश्वास की कड़ी ढीली पड़ती जा रही है- "*नातें तिगपाची बुनयाद विश्वास / नातें जगपाची आस / नातें केळ्ळोवपाचेंअ मोगाय / नातें तुटपांचे अहंकारान।"*

तीसरी कविता *शिक्षक* में कवयित्री ने अध्यापक के कर्तव्यों की ओर संकेत किया है। शिक्षक का असली दायित्व है - बच्चों को ज्ञान और सहारा देना तथा सही-गलत की पहचान कराकर उनके आत्मविश्वास को बढ़ाकर अच्छा इंसान बनाना। अदिती की अधिकांश कविताएँ जीवन के विविध संदर्भों से जुड़ी हुई हैं जिनमें मूल्यों और मर्यादाओं का चित्रण है। केरल के तृपूणितुरा गाँव में जन्मी सूर्या अशोक ने कविता, कहानी, नाटक, प्रवास वर्णन, बाल-साहित्य आदि विधाओं पर पुस्तकें प्रकाशित की हैं। आपको कई साहित्य के पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है।

इसी कड़ी में *संबंद* नामक कविता-संग्रह इस साल प्रकाशित हुआ जिसमें इन्होंने उपदेश, *जागो रे, देव मच्छर, प्रोत्साहन, जीवन, कोंकणी मेरी माँ, सुनामी, भाई-भाई में भेद, आटे की गुड़िया, मातृभाषा कोंकणी* आदि शीर्षक से कुल 73 कविताओं की रचना की है। सन् 2011 में राष्ट्रगीत के 150 वर्ष पूर्ण होने पर देश भर में अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। यहाँ सूर्या अशोक ने राष्ट्रगीत के रचयिता गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर के महिमामय व्यक्तित्व का चित्रांकन *धन्य जन्मु* कविता में किया है- "*रवींद्रनाथ ठाकुर - रिषीचें सारकें रूप! / वाचलें हावें खंयीच, तो जन्मु अपरूप / एक रिषीचें सारकें ज्ञानी जीवन / हे बहुमुख प्रतिभेची जीणच एक कवन / हांचे साहित्य कृतींची संख्याय केद्दी / आमचे जन्मांतु वाचून सरचीना, ते येदी।"*

एक दूसरी कविता *संबंध* में कवयित्री ने नारी जीवन के अलग-अलग संबंधों का जिक्र किया है। वह पुत्री, पोती, पत्नी, भाभी, बहू, सास, मौसी, दादी, सखी, गृहिणी आदि अनेक रूपों में अपने संबंधों और कर्तव्यों का निर्वाह करती है। आज के मीडिया युग में किस प्रकार हमारी संवेदनाएँ सूखती जा रही है, इसका वर्णन सूर्या अशोक ने *मनुष्यत्व म्हळ्ळेलें खंय?* (इंसानियत कहाँ गई?) कविता में किया है। इसमें एक व्यक्ति पुल के ऊपर से गहरे पानी में कूदता है, तो लोग उसे देखकर दौड़ पड़ते हैं लेकिन कोई उसकी जान नहीं बचाता है। यहाँ दर्शक उसका फोटो खींचने में लगे हैं, ताकि उसको जल्दी से फेसबुक पर डाला जा सके- "*नेटांतुल्यान, फेसबुक, ओरकुट-तरातरा / वाटेन मित्रांक पावोंवचाक धरधरा / एकल्याचे सरी दोळे जायनाय ओल्ले / मनुष्यत्व म्हळ्ळेलें खंय, मरून गेल्लें?*"

शैला (तरुलता) शरद शणै धुमटकार सेवानिवृत्त शिक्षिका हैं। आपका *कस्तुरी कळे* काव्य-संग्रह इस वर्ष प्रकाशित हुआ। इसमें शैला ने *जहाँ दुख जीता है, सच्चे ठंडे दिन, चेहरा प्रकृति का, होली, समुद्र, प्रकृति के जीव* आदि नाम से कविताएँ लिखी हैं। *आस* (आशा) नामक कविता में कवयित्री का कथन है कि मनुष्य को अपना जीवन बिना किसी आशा के परिश्रम करके जीना चाहिए। *आईची ऊब* (माँ की ममता) कविता में कवयित्री माँ को याद करते हुए उसकी विविध स्मृतियों में खो जाती है- "*आयज आईची खूब याद येता आईचें हांसतें / मुखामळ परत-परत दोळयां मुखार येता / आईचे मांडयेर माथें दवरचेंशें दिसता / ल्हवूच तिचो हात उखलून।*"

कोंकणी के युवा रचनाकारों में हनुमंत चंद्रकांत चोपडेकार अपनी एक खास पहचान बना चुके हैं। अभी तक कविता, नाटक, समीक्षा, एकांकी, बाल-साहित्य आदि कोंकणी की विभिन्न विधाओं में इनकी कुल तेरह पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। गोवा कोंकणी अकादमी, कोंकणी भाषा मंडल जैसी अन्य कई मान्य संस्थाओं से हनुमंत को कुल छह पुरस्कार भी प्राप्त हो चुके हैं। *एक चीट मोगाळ आईक...* (एक खत प्यारी माँ को...) नामक काव्य-संग्रह में शीर्षक कविता के अतिरिक्त *एक खत प्यारे पिता को, झूला,*

प्रपंच, आश्चर्य, दोषी, नए सरकार को, लोकतंत्र गुलाम हुआ, रहस्य, मानस कन्या, राम नाम सत्य है आदि नाम से कुल तीस कविताएँ संकलित हैं। कवि संग्रह की शीर्षक कविता में अपनी माँ को खत्त लिखकर अपने मन के भावों को व्यक्त करते हुए शहरी जीवन की दुखद स्थितियों और ग्रामीण जीवन की सुखद स्मृतियों की याद करता है- "*आनी जाणा आई, / ह्या एकसुरेपणाचे काँटे / जेन्ना-जेन्ना ताच्या / मनाक तोपतात / तेन्ना तेन्ना ताच्या / आळयाची ओलसाण सुकता / शारांतल्या घुस्मटांत / तें / गांवचो नितळ वारो सोदता / तुजी मायो-झरो सोदता / आई / तुजी माये-झरो सोदता*।"

दिगंत दिका कविता में कवि अपनी मातृभूमि का स्मरण करते हुए कहता है कि मैंने देश की लगभग चारों दिशाओं का भ्रमण किया लेकिन मुझे मेरे सोने जैसा गोवा का दर्शन कहीं नहीं हुआ। यहाँ के सुंदर खेत, पेड़, समुद्र की लहरें, गिरिजाघर, मंदिर आदि सुंदरता कहीं देखने को नहीं मिली। यहाँ पर छुआ-छूत, भेदभाव आदि भुलाकर लोग आपस में आत्मीय भाव से रहते हैं- "*दगंत दिका हुपल्यो सगल्यो सर ना दुसऱ्या कोणा / भांगराचें गोंय म्हजें मोतयांची रे फुल्लयात बोणां / सोबीत झाडां कुळांगरां जैतिवंत धोलतात शेतां / उदकां ल्हारां दर्या ल्हारां खळखळटा पायजणां*।"

माया मंगेश कामत एक कवयित्री के साथ-साथ मराठी नाटक से भी जुड़ी हैं। इस वर्ष आपका *उमाळयांचो कुरपणो* नामक काव्य-संग्रह प्रकाशित हुआ। इस संग्रह में *कुछ मन से; मेरा ईश्वर; एक, दो, तीन, चार, पाँच, सात आठ, नौ, दस, ग्यारह; अनोखा रास्ता; प्यार की याद, डर, और आगे चलना है, और पुनः अंकों में* कुल 84 कविताएँ संकलित हैं। *अजून फुडें चलचें आसा* (और आगे चलना है) कविता का स्वर प्रेरणादायक है। कवयित्री का कथन है कि रास्ता समाप्त हो गया है लेकिन फिर भी अभी हमें आगे बढ़ना है। झाड़-झंखाड़ों के बीच भी हमें नया रास्ता खोजना है। रात अगर काली भयानक है तो दिन अभी आना बाकी है- "*वाट हांगा सोपली तरी, अजून फुडें चलचें आसा / काट्याकुट्या झुडपांतल्यान, नवी वाट सोदची आसा / .... / रात काळी भयाण जरी, लखख दीस उजवाडची आसा / पावलां तुर्जी फाटी कित्याक, अजून फुडें चलचें आसा*।"

1987 CHD/15—3A

एक दूसरी कविता *मूर्त तुजी घडयतना* में माया ने एक माँ की अपनी पुत्री के प्रति ममता को व्यक्त किया है कि मैंने तुम्हारी मूरत गढ़ते समय बहुत कष्ट उठाए हैं। मैंने अपने पसीने से तुम्हारी रचना की है तथा अपने दोनों हाथों से गुलाबी रंग दिया है। प्यार के फूलों की मैंने तुम्हारे बालों में माला पहनाई है। आज तुम पराए घर जा रही हो लेकिन मुझे भूलना नहीं– *"मूर्त तुजी घडयतना / सोसले हांवें कितले त्रास / घाम गालून / कश्ट काडून / रचणाय केली / तुजी खास / म्हज्या दोनूय हातांनी / रंग दिलो गुलाबी / मोगार्ची फुलां गुंथून / माळ्ळी तुका फातीय बी / गोय्या-गोय्या / रुपार तुज्या / वोतलें हांवे।"*

वर्ष 2013 की कोंकणी कविताएँ मूलतः जीवन और जगत की रोजमर्रा की जीवानुभूतियों को केंद्र में रखकर लिखी गई हैं। ये किसी विशेष विचारधारा से प्रभावित नहीं हैं। इसके साथ ही समसामयिक प्रसंगों, घटनाओं, संदर्भों आदि का चित्रण कम हुआ है। पारिवारिक संवेदनाओं में माँ पर केंद्रित कई रचनाएँ पढ़ने को मिलीं।

कोंकणी कथा-साहित्य

कोंकणी काव्य लेखन की तुलना में इस साल कथा-लेखन की गति धीमी रही है। वस्तुतः अन्य भारतीय भाषाओं में विशेषकर हिंदी साहित्य में खूब कहानियाँ लिखी जा रही है। कोंकणी भाषा और साहित्य का लेखन गोवा से लगी दक्षिण की समुद्र पट्टी पर बसे कारवाड़, मंगलौर एवं कालीकट तक हो रहा है। कोंकणी की कई लिपियाँ और बोलियाँ हैं जोकि अपने भू-भाग की कला और संस्कृति से प्रभावित हैं। कर्नाटक राज्य के मंगलूर जनपद में 1984 में जन्मे एडवीन जे. एफ. डिसोजा का 450 पृष्ठों का बृहत् उपन्यास *काळें भांगार* (काला सोना) नामक उपन्यास इस वर्ष प्रकाशित हुआ। कोंकणी कथा साहित्य के क्षेत्र में डिसोजा का एक प्रमुख स्थान है। अभी तक आपने एक से बढ़कर एक 33 उपन्यासों और लगभग 120 कोंकणी कहानियों का प्रकाशन किया है। आपकी कहानियाँ कन्नड,

1987 CHD/15—3B

तमिल, हिंदी, अंग्रेजी आदि भाषाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं। डिसोजा ने 16 वर्ष तक कुवैत में नौकरी की है।

जे. एफ. डिसोजा द्वारा लिखित उपन्यासों में *काळें भांगार* एक उत्कृष्ट कोटि का उपन्यास है। इस उपन्यास की कथा मंगलूर के एक सीधे-सीधे घराने से शुरू होती है और अमेरिका, इजराइल, इराक, बगदाद, कुवैत आदि तक फैली हुई है। इसमें प्रेम, साहस, स्वार्थ, तस्करी, इराक-कुवैत का युद्ध आदि का जिक्र हुआ है। कुवैत में काम करने वाले भारतीय और अन्य देशों के कामगारों ने काले सोने के माध्यम से खूब पैसा कमाकर अपनी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ की। इससे कामगारों के खान-पान, रहन-सहन, वेश-भूषा, बच्चों की शिक्षा आदि के स्तर में काफी सुधार आया। आर्थिक संपन्नता का परिणाम यह हुआ कि पास-पड़ोस की ईर्ष्या और द्वेष के कारण आपस में दुश्मनी भी बढ़ी। बच्चे सही रास्ते पर न चलकर बुरे रास्ते पर चलने लगे। कथा के संपूर्ण ताने-बाने में इस प्रकार की उभरने वाली परिस्थितियों का चित्रण किया गया है। लेखक को अपनी निजी अनुभूतियों का बयान करते हुए पश्चाताप भी है और भय भी। इस प्रकार का चित्रण दामोदर मावजो के *कार्मेलीन* (1981) और हेमा नायक के *भोगदंड* (1997) उपन्यास में मिलता है।

कोंकणी कहानी लेखन के क्षेत्र में डॉ. मधुसूदन पुरुषोत्तम जोशी का *सायनॅप्स* (साईनेस) नामक सोलह कहानियों का संग्रह प्रकाशित हुआ। इसमें *भेषज, गोपाल का विसर्जन, मनी मैटर्स, सपना एक घर का, स्वतंत्रता, घोंसला, भूख, दी एंड* आदि शीर्षक की कहानियाँ संग्रहीत हैं। लेखक ने वैज्ञानिक संकल्पना, जीवशास्त्र, आयुर्वेद जैसे नूतन विषयों पर कहानी लिखने का प्रयास किया है। शीर्षक *सायनॅप्स* कहानी में लेखक ने मनुष्य के शरीर में होने वाले बदलावों और दिमाग की मांसपेशियों की उत्तेजित अवस्था में अतीत की स्मृतियों के तरोताजा होने की बात की है। *भेषज* जोशीजी की एक लंबी कहानी है, जिसमें उन्होंने परंपरागत विभिन्न अवसरों पर अंधश्रद्धा के कारण जानवरों की बलि का चित्रण किया है। इसके माध्यम से वे पुरानी मान्यताओं, रीति-रिवाजों पर करारा प्रहार करते हैं।

युवा कहानीकार स्मिता नागेश प्रभू चोडणेकार के *म्हूर्तमणी* (मंगलसूत्र) कहानी-संग्रह में *तुम्हारा एस.एम.एस. डीयर, किश्मत, ल्हानशें जग (छोटी सी दुनिया), नवें घर, मायेचो हात (ममता का हाथ), सार्थक, अर्धनारी नटेश्वर, अशेंचे म्हणलें (ऐसे ही कहा), सुस्त न्हीद (गहरी नींद), मुक्ति, नीता की कहानी* नामक कुल बारह कहानियाँ संकलित हैं। नवें घर कहानी आज की वृद्धावस्था समस्या को रेखांकित करती है। प्रस्तुत कहानी का पात्र वासुदेव अथक परिश्रम करके अपने परिवार का पालन-पोषण करता है। जब वह बूढ़ा हो जाता है तो उसकी पत्नी मीना और पुत्र केशव उसे वृद्धाश्रम में भेज देते हैं। केशव अपने पिता के 65वें जन्मदिन के अवसर पर *नया घर* यानी वृद्धाश्रम भेंट करता है। वहाँ वासुदेव की मित्रता पोसू से हो जाती है। कम उम्र होने के कारण वह वासुदेव का बहुत ख्याल रखता है। इसके अतिरिक्त उनके खाने-पीने और दवा आदि की व्यवस्था उचित सयम पर करता है। इन दोनों ने कपड़े बुनने का काम भी सीख लिया था। इससे थोड़ा पैसा भी कमा लेते थे। एक दिन वासंती नाम की एक औरत वृद्धाश्रम में वासुदेव से मिलने आई और अपने साथ ले जाने की इच्छा व्यक्त की। वासंती और वासुदेव बचपन में एक-दूसरे को बहुत चाहते थे। वासुदेव का पोसू से बहुत लगाव हो गया था और वह उनसे निःस्वार्थ प्रेम करता था। वासुदेव के सामने एक धर्म संकट की स्थिति खड़ी हो जाती है कि वह क्या करें? अंततः वह पोसू को गले लगकर उसके पास ही रहने का निर्णय लेता है। वासंती निराश होकर वापस लौट जाती है।

बाल कथा-साहित्य

कोंकणी साहित्य की विभिन्न विधाओं में बाल-साहित्य भी खूब लिखा जा रहा है। नरेंद्र काशीनाथ कामत की बाल कहानियों का संग्रह *म्होंवाळ काणयो* (मधुर कहानियाँ) में *सत्यवादी गणेश* की *वाणी, दोन साळकांची काणी* (दो कमलों की कहानी), *देववाणी, राजाल्या मुकूटांतलो मणी* (राजा के मुकुट का हीरा), *राधाराणी, समस्तीपूरची राणी* - कुल छह कहानियाँ संकलित हैं। इन कहानियों के भाव, विचार एवं भाषा में विविधता के साथ

बच्चों में मानवीय मूल्यों को जाग्रत करने का भाव है। *सत्यवादी गणेश की वाणी* कहानी में गनेश के परिवार की ईमानदारी और निष्ठा की कहानी है। इसमें पिता द्वारा सिखाए गए अच्छे संस्कारों का प्रभाव गनेश पर पड़ता है और धन के लोभ से अपने को वंचित रखते हुए भगवान गणेश की परीक्षा में खरा उतरता है। वस्तुतः आज बच्चों में अच्छे संस्कार न होने के कारण वे पैसों के लिए नाना प्रकार के गलत धंधों में लिप्त हैं।

कोंकणी साहित्यकारों में दिलीप धर्मा बोरकार ने लेखन और प्रकाशन से अपना विशिष्ट स्थान बना लिया है। आपकी काव्य, कथा, नाटक, एकांकी, बाल-साहित्य, ललित निबंध आदि विधाओं पर कई पुस्तकें प्रकाशित हैं। इसके साथ यहाँ के दैनिक समाचार-पत्रों में भी लेखन का कार्य करते हैं। आपको स्थानीय महत्वपूर्ण पुरस्कारों के साथ-साथ साहित्य अकादमी के पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। इस वर्ष आपका *रावंस पावलो दुबय* (रावस पहुँचा दुबई) नामक बाल कथा प्रकाशित हुई। प्रस्तुत कथा में लेखक ने रावस नामक मछली के माध्यम से मनुष्य द्वारा पर्यावरण की क्षति का उल्लेख किया है। रावस अपनी साथी मछलियों से कहती है कि इंसान नाना प्रकार से हम लोगों को कष्ट पहुँचाता है। वह हमें मारकर खाता है। सागर के अंदर बड़े-बड़े जहाज़ तेल गिराकर हमें श्वास लेने में दिक्कत पहुँचाते हैं। रावस कहती है कि हम यह मान लेते हैं कि बड़ी मछली छोटी मछली को खाती है और मनुष्य भी हमें खाता है लेकिन वे यह नहीं समझते कि सागर के अंदर तेल गिरने से वह हमारे अंदर जाता है और मनुष्य जब हमें खाते हैं, तो इससे उनका ही नुकसान होता है। यह कहानी पर्यावरण की रक्षा करने का संदेश देती है।

कुमूद भिकू नायक की *मॉनिटर* नामक कहानी-संग्रह में शीर्षक कहानी के अतिरिक्त *योगायोग*, *भुरग्यांली आजी* (बच्चों के आजी), *इष्टागत* (दोस्ती), *निश्चेव*, *सरपंच*, *सोपूत*, *रानाची राखण*, *गावंचो पूत*, *वाडवीस* और *पिकनिक* नाम से कुल दस कहानियाँ हैं। *इष्टागत* कर्नाटक से गोवा आए व्यंकटेश और यहाँ के रामदास नामक दो ब्राह्मण मित्रों की कहानी है। ये

दोनों एक-दूसरे के पड़ोसी थे और इनकी आपस में गाढ़ी मित्रता थी। व्यंकटेश के चार पुत्र और रामदास के चार लड़कियाँ थीं। रामदास अपनी चौथी बेटी माया की शादी व्यंकटेश के चौथे बेटे आनंद से करके उसे अपना घर जँवाई बनाकर अपनी पुत्र की इच्छा पूरी करना चाहता था। आपस में बात करने पर शादी तो हो गई लेकिन जब सुबह आनंद अपने घर जाता और शाम को ससुराल आता तो भाइयों के मन में शंका हो गई कि यह यहाँ अपना हिस्सा लेने के लिए आता है। यह बात आनंद के अंदर नहीं थी, वह तो माँ और भाइयों के प्रेमवश जाता था। आनंद भाइयों के व्यवहार से दुखी होकर बीमार पड़ गया। बीमार पड़ने पर जब उसके भाई उसे देखने आते तो वह बहुत प्रसन्न होता और अपना दुख भूल जाता। यह कहानी इस बात की ओर संकेत करती है कि आज प्रेम भी स्वार्थ की भावना से पंकिल हो गया है।

जाणटो दोमळो (बूढी चींटी) एवं *आजीमायलो पोसो* (दादी माँ के चुटकुले) नामक उषा ज. कामत के दो बाल कथा-संग्रह इस वर्ष प्रकाशित हुए। *जाणटो दोमळो* कहानी-संग्रह में शीर्षक कहानी एवं *चूक, नामो आनी कुंचू, तिरसो, सांगोड, आतिश, चानये पिलां, धिटाय, रिंकूचो वाडदीस, हुशार कावळो* नाम से कुल दस कहानियाँ संकलित हैं। इस संग्रह की अंतिम कहानी *हुशार कावळो* (बुद्धिमान कौवा) एक कौवा और लोमड़ी की कहानी है, जिसमें लोमड़ी कौवे के मुँह में माँस का टुकड़ा देखकर उसे खाने के लिए उसकी मीठी आवाज की प्रशंसा करती है। कौवा उसकी होशियारी को समझकर माँस का टुकड़ा डाल पर रखकर गाने लगा। लोमड़ी खिसियाकर उसकी प्रशंसा करने लगी। कहने का तात्पर्य यह है कि हमें दूसरे को मूर्ख नहीं समझना चाहिए। आजकल सब चालाक हो गए हैं। दूसरे कहानी-संग्रह में *शिटूकसाण* (होशियारी), *छोटू, पेन, योगायोग* (इत्तफाक), *सर्त* (प्रतियोगिता), *रीत* (शिष्टाचार), *व्हड मन* (परोपकारी मन), *कुस्मीर* (सब्जी), *गजाल ल्हानशीच* (छोटी-सी बात), *प्रामाणिक केळेवाणी* (ईमानदार केलेवाला) नाम से कुल ग्यारह कहानियाँ संग्रहीत हैं। इन कहानियों में

शिष्टाचार एक माँ और बेटी की कहानी है, जिसमें माँ चाकलेट खाने के बाद पुनः उस चाकलेट लगे हुए कागज को चाटती है, जिसे उसकी बेटी रीमा देखती है। एक दिन जब उसके घर रीमा की माँ की सहेली बिंदु आती है और प्यार से रीमा को चाकलेट देती है तो वह भी अपनी माँ की तरह हरकत करती है, तो माँ को क्रोध आता है, लेकिन वह इसे अपनी भूल मानकर बेटी को समझाती है। वस्तुतः इस कहानी से यह प्रेरणा मिलती है कि हमें अपने बच्चों के सामने ऐसी हरकतें नहीं करनी चाहिए, जिसका बुरा प्रभाव उनकी मानसिकता पर पड़े।

हर्षा सदगुरु शेटये की *म्हजी माती, म्हजे मळब* (कविता झेलो), *जगमां* (बाल साहित्य), *मोतयांची माळ* (ललित निबंध) और *आनंद यात्रा* (प्रवास वर्णन) नामक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। *चला, भारत भोंवुया* (चल, भारत घूमेंगे) नामक प्रवास वर्णन की पुस्तक में *धुक्यांतले दिल्लीत एक दीस* (ओस के नीचे दिल्ली का एक दिन), *चंडीगढ़, गुलाबी शहर जयपुर, सोबीत शिमला* (सुंदर शिमला), *हरिद्वार-ऋषिकेश, म्हाबळेश्वर, हैदराबाद, ताजा बंगलौर, कूर्ग, विजापूरचो गोलघुमट, तिरुअनंतपुरम, चेन्नय, ऊटी* शीर्षक से कुल तेरह प्रवास-वर्णन संकलित हैं। इसमें लेखिका ने देश के विभिन्न स्थलों का चित्रण किया है।

कोंकणी नाट्य एवं तियात्र साहित्य

गोवा में कोंकणी नाटक एवं तियात्र की एक लंबी एवं सुदृढ़ परंपरा रही है। गोवा मुक्ति के बाद पुंडलीक नायक, देवीदास बाबय, भरत नायक, दत्ताराम कामत बांबोलकर, विष्णूवाघ, प्रकाश वजरीकर, अनिरुद्ध बीर जैसे नाटककारों एवं तियात्रकारों की परंपरा में राजय पवार का नाम भी आता है। युवा कोंकणी साहित्यकारों में एक जाना-पहचाना नाम है। राजय पवार के अभी तक कुल छह नाटक प्रकाशित हो चुके हैं। इनके ज्यादातर नाटक मंचित हो चुके हैं। इस वर्ष प्रकाशित *टेंशन फ्री* नाटक को काफी प्रसिद्धि मिली है। इसमें बाजार या बस्तियों के पीछे घूम-घूम कर कचरा बीनने वालों की अपनी जमीन, खेती-बारी, घर-द्वार कुछ भी नहीं होता। ये खाना-बदोश

की तरह घूमते रहते हैं। इनकी जवान लड़कियों को कुछ लोग घूरते हैं और कभी-कभी उनका शारीरिक शोषण भी करते हैं। *टेंशन फ्री* नाटक की कई प्रस्तुतियाँ भी हो चुकी हैं। यह प्रेक्षकों द्वारा काफी सराहा गया। सुचिता नार्वेकर के दो अंकों के *शॉर्टकट* नाटक में एक परिवार की हास्यप्रद कथा है। इसमें दामू, उसकी पत्नी शांती, दामू का भाई शांताराम (सेंटी) और उसकी पत्नी शेवंती (सेवंटी), आलोक दामू का बेटा और साधू हैं। दामू भगवान का भक्त और अपनी पत्नीं शांती आधुनिक खयालात की है। दामू का भाई और उसकी पत्नी भी इतने आधुनिक विचारों के हैं कि वे अपना नाम क्रमशः सेंटी और सेवंटी रख लेते हैं।

कोंकणी नाट्य-लेखन, निर्माता, निर्देशक और कलाकार के रूप में राजदीप नायक का नाम जाना पहचाना है। इन्होंने अपने जीवन के अनुभवों और बार-बार नाटक के प्रयोग से मंचीय कला में भी निणुपता प्राप्त की है। राजदीप का *ओ बाय* सरल एवं सहज बोलचाल की भाषा में लिखा गया दो अंकों का एक यथार्थवादी व्यंग्य नाटक है। नाटक की मंगला नामक पात्र द्वारा पेडणे तालुका की बोली का सुंदर उदाहरण प्रस्तुत किया गया है। मंगला : "भाऊ, काय आसतय जाणा? फायदो सगळ्याक सोदचो नासता।" संदीप पुंडलिक मापारी का *सॉरी मॅडम* पारिवारिक जीवन पर आधारित चार अंकों का नाटक है। परंपरागत सोच के कारण प्रदोश डॉक्टर के पास नहीं जाता है, जबकि उसकी पत्नी आराधना उससे कहती है कि हमें संतान के लिए डॉक्टर को दिखाना चाहिए। प्रदोश की माँ को इस बात का बेहद दुख है कि उसे पोता नहीं है। प्रदोश एक बच्चे को गोद लेने की बात करता है। इस बीच आराधना का प्रेमी प्रकाश उसके घर में नौकर बनकर आता है। प्रकाश, आराधना और डॉक्टर मिलकर एक नाटक करते हैं, जहाँ प्रदोश शंकाओं-कुशंकाओं के बीच से गुजरता है। अंततः प्रदोश इलाज कराने के लिए तैयार हो जाता है। *को कोंच को प्रेमल्याची सासू* रविंद्र शिवा चोडणकार का दो अंकों का प्रेमलो और वस्तला की प्रेम कहानी पर आधारित नाटक है। सच्चे प्रेमी को उसका प्यार मिलता ही है।

गोवा में विष्णू सुर्यावाघ को मराठी एंव कोंकणी साहित्यकार एवं लोकप्रिय जननेता के रूप में जाना जाता है। गद्य लेखन के साथ-साथ आप एक अच्छे मंचीय कवि के रूप में जाने जाते हैं। संप्रति सेंत अंदारे नामक विधानसभा क्षेत्र के विधायक भी हैं। इस वर्ष आपका *नचिकेतस* नामक एकांकी और *तीन पैशांचो* नाम से तियात्र की पुस्तक प्रकाशित हुई। *नचिकेतस* में तीन एकांकी नाटक है, जिसमें पहला *नचिकेतस* और दूसरा *नारियल आपा हवा में झूल रहा* है और तीसरा *महाबली* युवा कोंकणी कथाकार महाबली की कहानी पर आधारित है। *नचिकेतस* एकांकी पौराणिक कथा के आधार पर यम और नचिकेता के बीच गूढ़ प्रश्नों को लेकर संवाद है। दूसरे एकांकी *नारियल आपा हवा में झूल रहा है* में पर्यावरण की समस्या और मंत्री की शोषण-नीति का खुलासा किया गया है। पर्यावरण की रक्षा के लिए एक पेड़ दारुण कथा सुनाता है कि कैसे पर्यावरण की रक्षा की जा सकती है। *महाबळी* में हमारे स्वार्थी समाज का चित्रण किया गया है। *तीन पैशांचो तियात्र* को विष्णू सूर्यावाघ ने *बेर्टोल्ट ब्रेख्त* के *थ्री पेंनी ऑपेरा* नाटक को आधार बनाकर लिखा है। यह हास्योन्मुख के साथ-साथ जीवन और समाज का यथार्थवादी चित्रण करता है। इसका नायक गुंडा है, जोकि कई लड़कियों को अपने प्रेम के जाल में फँसाता है और अंत में मंत्री के नाम पर फाँसी की सजा से मुक्त हो जाता है। राजनैतिक भ्रष्टाचार के साथ इसमें आधुनिक युवाओं की सोच को भी दर्शाया गया है।

गोवा के नामवंत साहित्यकार, चिंतक, वकील, भूतपूर्व अध्यक्ष गोवा कोंकणी अकादमी श्री उदय भेंब्रे का पाँच अंकों का नाटक *कर्णपर्व* इस वर्ष प्रकाशित हुआ। यह नाटक महाभारत के कर्ण-प्रसंग पर आधारित है, जिसमें लेखक ने परंपरागत कहानी से हटकर उसमें कुछ नवीनता लाने का प्रयास किया है। महाभारत एक महाकाव्य है, न कि इतिहास लेकिन यह सही है कि उसका बीज कथानक ऐतिहासिक घटनाओं पर आधारित है, जोकि थोड़ा-बहुत तत्कालीन इतिहास से अनुरूप है। लेखक ने इस मत का खंडन किया है कि पांडवों का जन्म मंत्र से नहीं हुआ था, बल्कि कुंती के द्वारा

विभिन्न पुरुषों के संबंध से हुआ। महाभारत के लगभग अधिकांश चरित्र अपनी मानवीय दुर्बलताओं के कारण कुछ चरित्रहीन और उनमें से कुछ सदाचारी भी थे। इनमें कर्ण का जन्म एक रहस्यमयी घटना बनी रही। लेखका का मानना है कि कृष्ण एक नेता के रूप में किसी भी तरह से महाभारत के युद्ध से बचना चाहते थे। कृष्ण ने कुंती को इस बात को मनवाने पर जोर दिया कि उसका पुत्र कर्ण उसकी शादी के पहले हुआ था वस्तुतः कुंती ने इसे मना कर दिया। कृष्ण जब अपने इस प्रयास में असफल हुए तो उन्होंने दूसरा दांव खेला और कुंती को कर्ण के पास भेजा। कुंती ने कर्ण से कहा कि तुम मेरे बड़े पुत्र हो लेकिन कर्ण ने इसे मानने से अस्वीकार कर दिया और कृष्ण का प्रयास नाकाम हो गया। शेष कहानी यथावत हैं, लेकिन यह सीधे-सीधे नहीं कही गई है। युद्धभूमि में कर्ण अर्जुन से प्रभावित हुआ और मृत्यु से पूर्व उसने अर्जुन से कहा कि माँ से कहना कि मैंने अपने वचन का पालन किया। इस बात से अर्जुन बहुत परेशान हुए और उन्होंने कृष्ण से पूछा कि इसका क्या मतलब है, लेकिन उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया।

अन्य कोंकणी-साहित्य

गोवा में मुकेश थळी साहित्यकार के अलावा आकाशवाणी पणजी केंद्र में वृत्त निवेदक के रूप में प्रसिद्ध हैं। आपकी कोंकणी कविता, गीत, नाटक और निबंध की कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। इसके साथ ही आपको कई पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। इस वर्ष आपका *जीवनगंध* शीर्षक से 22 निबंधों का एक संग्रह प्रकाशित हुआ। इसमें प्रारंभ के सात निबंध गोवा के कलावंतों और साहित्यकारों, एक पर्यावरण तथा अन्य जीवन के विभिन्न संदर्भों, प्रसंगों और अनुभूतियों पर आधारित हैं। सुफला रुद्राजी गायतोंडे का *घमघमीत हातो* नाम से 27 निबंधों का संग्रह प्रकाशित हुआ। इसमें *आमोरी* निबंध के माध्यम से बताया गया है कि आज किस प्रकार से दादा-दादी और नाना-नानी के अभाव और व्यस्तता के कारण बच्चों में परंपरागत संस्कारों में कमी आ रही है। प्रखर वक्ता, गोवा कोंकणी

अकादमी के उपाध्यक्ष एवं कोंकणी के प्राध्यापक भूषण भावे ने डॉ. सु. बा. कुलकर्णी की मराठी पुस्तक *कोंकणी भाषा प्रकृति आनी परंपरा* का कोंकणी में अनुवाद कर प्रकाशित किया। इसमें कुल 12 निबंध हैं, जिसमें *मोगरा खिला है* निबंध में लेखक ने गोवा-मुक्ति के पूर्व और बाद के कोंकणी साहित्यकारों के योगदान की चर्चा की है। गोवा के प्रखर पत्रकार और संपादक नरेश प्रभुदेसाय का समाचार-पत्र के लेखों का संग्रह *तालगडी* नाम से प्रकाशित हुआ। इसमें गोवा के विभिन्न विषयों और यहाँ विभिन्न अवसरों पर आए साहित्यकारों, कलाकारों एवं अन्य विशिष्ट जनों के विचारों आदि का उल्लेख किया गया है। जैसे 'भाषा या धर्म' के संबंध में ए. आर. अनंतमूर्ति ने कहा कि "मनुष्य की अपनी प्रादेशिक भाषा होती है। अगर भाषा का अंत हुआ तो वह अपनी पहचान धर्म के नाम पर बनाएगा। इससे धर्म के नाम पर झगड़े होंगे। भाषा तो सभी धर्मों को अपनाती है। यहाँ तो लोग कोंकणी से अधिक अंग्रेजी को अपनाने में लगे हैं।"

पत्र-पत्रिकाएँ

गोवा में कोंकणी की अपेक्षा मराठी के समाचार-पत्र अधिक संख्या में प्रकाशित होते हैं। इसका कारण है कि मराठी की सांस्कृतिक जड़ें यहाँ मजबूत हैं। पुर्तगीज शासन के बाद भी यहाँ के कार्यालयों और शैक्षिक संस्थाओं में अंग्रेजी का बोलबाला रहा है। अब धीरे-धीरे कोंकणी भाषा का सवाल यहाँ की अस्मिता से जुड़ गया है। कोंकणी भाषा और साहित्य का बोलबाला बढ़ रहा है चूंकि यहाँ अन्य भाषा-भाषियों की संख्या भी काफी मात्रा में है, इसलिए आज भी गोवा में अंग्रेजी समाचार-पत्र खूब पढ़े जाते हैं। अंग्रेजी की भाँति मराठी के पाठक भी काफी हैं। आज भी कोंकणी का एकमात्र समाचार-पत्र पणजी से *सूनापरांत* प्रकाशित होता है। गोवा आर्थिक रूप से संपन्न होने के कारण यहाँ सड़क, बिजली और पानी की सुविधा गाँव के सुदूर अंचलों तक है। यही कारण है कि जनसंचार के मुद्रण एवं इलैक्ट्रॉनिक माध्यमों का प्रचार-प्रसार व्यापक पैमाने पर है। कोंकणी पत्रिकाओं की बात की जाए तो स्थिति बहुत अच्छी है। प्रो. माधवी सरदेसाय एवं श्री

दिलीप बोरकार के संपादकत्व में *जाग* और *बिंब* नामक मासिक पत्रिकाएँ नियमित प्रकाशित हो रही हैं। इसमें कोंकणी कविता, कहानी, लेख, समीक्षाएँ, जीवनी, संस्मरण आदि विधाओं का प्रकाशन होता है। इसके अलावा श्री तुकाराम शेट *कोंकण टायम्स* और गोकुलदास प्रभ *ऋतु* नामक त्रैमासिक पत्रिका का संपादन नियमित रूप से कर रहे हैं। *कुळागर, जैत, शोध, उर्बा, बारदेश, चवथ, युवांकुर* आदि नियमित-अनियमित पत्रिकाएँ छप रही हैं।

पुरस्कार

कोंकणी भाषा एवं साहित्य के संवर्धन हेतु गोवा कोंकणी अकादमी एवं अन्य संस्थाएँ यहाँ के कोंकणी साहित्यकारों को विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित करती हैं। मैं यहाँ साहित्य अकादमी, दिल्ली द्वारा इस वर्ष दिए गए पुरस्कारों का उल्लेख कर रहा हूँ। इस वर्ष कोंकणी में साहित्य अकादमी का पुरस्कार श्री तुकाराम शेट को *मनमोतयां* (निबंध-संग्रह) एवं अनुवाद का श्रीमती हेमा नायक को अलका सरावगी के उपन्यास *कलिकथा वाया बायपास* तथा बाल-साहित्य का श्रीमती माया खरंगटे को *रानाच्या मनांत* पुस्तक के लिए मिला। गोवा का सबसे बड़ा गोमंत शारदा पुरस्कार श्री लॅम्बर्ट मस्कारेन्हासजी को मिला।

□□□